□[Shri Suresh Pachouri]

Death due to head injury : in 1986 95, in 1987 120 and in 1988 60. It is evident from this data that a large number of head injury patients are admitted to Gandhi Medical College, Bhopal. Most of the head injury patients are very sick, unconscious, patients with injury to their brain, and they need specialised investigation and emergency management from a well-trained neurological team. Gandhi Medical College, Bhopal, is an old medical college in Madhya Pradesh and should have all the facilities for the people of Bhopal. Establishment of neurological services in Gandhi Medical College will be useful for patients suffering from head injuries brain tumour, spinal diseases etc. not only from Bhopal but from neighbouring areas as this facility is not available throughout the State except Gwalior. This can be done in the form of opening a separate department of neuro-surgery as is in Safdarjang and Ram Manohar Lohia Hospitals in Delhi or in the form of neuro-sciences centre, that is neurology plus neuro-surgery, plus allied neuro-sciences. The former Chief Minister of Madhya Pradesh, who is presently our Union Health Minister, announced in a public meeting in Bhopal to set up a neuro-surgery unit in Bhopal. The unit will have the facilities of scanning machine, new operation theatres, new wards etc. I urge the Government to implement this and request the Health Minister to provide the necessary assistance and facility to set up a full-fledged neuro-surgery and neurology facility for Bhopal. Thank You.

श्री सुरेन्द्र सिंह (हरियाणा) : जो बात अभी पचौरी जी ने उठाई है, मैं उसका समर्थन करता हूं ।

कुमारी सईदा खातून (मध्य प्रदेश) : मैं भी पचौरी जी का समर्थन करती हूं।

Functioning of Rajasthan Wakf Board

डा. अबरार अहमद खान (राजस्थान) : महोदया, मैं इस विशेष उल्लेख के माध्यम से राजस्थान की वक्फ सम्पत्तियों की ओर आपका ध्यान दिलाना चाहूंगा । राजस्थान वक्फ सम्पत्ति के दृष्टिकोण से बहुत धनाढ्य है, लेकिन राजस्थान की वक्फ सम्पत्तियों पर बड़ी तेजी से अतिक्रमण और कब्जा किया जा रहा है । प्राइवेट लोग जितनी भी वक्फ सम्पत्ति है, उस पर काफी काबिज है और कुछ पर राज्य सरकार के दफ्तर भी काबिज हैं और राज्य सरकार उन वक्फ सम्पत्तियों को खाली करवाने में या वक्फ बोर्ड को दिलवाने में बिलकुल नाकामयाब है ।

इसके साथ ही मैं एक और बात राजस्थान वक्फ बोर्ड के बारे में कहना चाहूंगा कि वक्फ बोर्ड जो बना हुआ है, जिसकी आमदनी का जो जरिया है, वह 6 फीसदी वहां की मस्जिद, मजारों से लिया जाता है उनकी आमदनी का और इसलिए लिया जाता है कि वह वैलफेयर के काम में आए, बच्चों को उससे स्कालरशिप दिया जाए, बेवाओं की उससे मदद की जाए, लेकिन वह सारे का सारा 6 फीसदी मात्र वक्फ बोर्ड के कर्मचारियों की तनख्वाह के अंदर बंट जाता है । उससे बिलकुल किसी को स्कालरशिप नहीं दिया जाता, किसी बेवा की कोई मदद

नहीं की जाती, किसी यतीम की कोई मदद नहीं की जाती ।

राजस्थान वक्फ बोर्ड की आज तक राज्य सरकार या केन्द्र सरकार ने एक पैसे की, किसी भी प्रकार की सहायता नहीं दी है इसलिए मैं इस विशेष उल्लेख के माध्यम से यह आग्रह करना चाहूंगा कि वक्फ बोर्ड के जितने भी खर्चे हैं, कर्मचारियों का वेतन है, वह कम से कम सरकार वहन करे और उस वक्फ बोर्ड को आर्थिक सहायता दें।

इसके साथ ही साथ, वक्फ सम्पत्ति के रूप में जो कब्रिस्तान हैं, हर मरने वाले मुसलिम सम्प्रदाय के आदमी को मरने के बाद दो गज जमीन की आवश्यकता होती है । तो आज गजट नोटिफिकेशन से जो कब्रिस्तान की जमीनें हैं, उन पर बड़ी तेजी से अतिक्रमण हो रहा है—कहीं हाऊसिंग बोर्ड बन रहे है, कहीं जमीनें अलाट की जा रही हैं, कई जमीनें सरकारी दफ्तरों के अंदर दबी हुई हैं । तो उन कब्रिस्तान की जमीनों को खाली करवाया जाए ।

इसके साथ ही साथ मैं एक बात और कहना चाहूंगा कि हमारे देश में धार्मिक भावनाएं बहुत मजबूत हैं और उनकी मजबूती की वजह से मेरी यह मान्यता है कि देश की स्थिरता में भी मजबूती मिलती है । देश में जो गरीब और अमीर की खाई है, देश में जो ऊंच और नीच की खाई है, देश में जो शिक्षा और अशिक्षा की खाई है, उस खाई को आदमी मात्र अपनी धार्मिक भावनाओं की वजह से स्वीकार करता है । जब वह अपने आपको बहुत गरीब देखता है, दूसरे को अमीर देखता है, तो सिर्फ इस बात से वह सब्र करता है कि मुझे अल्लाह ने ऐसा ही बनाया है या भगवान ने मेरी किस्मत में ऐसा ही लिखा है । इस बात पर सब्र करके वह शांत होता है और इसी शांति की वजह से स्थिरता का जन्म होता है । अगर यह धार्मिक भावना न होती, तो शायद इस देश में कोई अमीर, अमीर न रह सकता गरीब आदमी संख्या में इतने हैं कि उनको पकड़ करके नीचे उतारा जा सकता था, अपने बराबर लाकर बिठाया जा सकता था, लेकिन अंत में वह फैसला करता है कि मुझे भगवान ने ऐसा ही बनाया है, मुझे अल्लाह ने ऐसा ही बनाया है, मेरी किस्मत में ऐसा ही है । तो इस धार्मिक भावना की कद्र करते हुए आज जो नई आबादियां एक-एक लाख, दो-दो लाख आदमियों की बन रही हैं, वहां कहीं भी किसी मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, या गिरजा की जमीन नहीं छोड़ी जाती है और उसकी वजह यह होती है कि वह लोग अनावश्यक रूप से जबरदस्ती के तरीके से वहां मंदिर, गिरजा, मस्जिद बनाते हैं और सरकार जाकर उनको तोड़ती है और जब उनको तोड़ा जाता है, तो सांप्रदायिक भावना भड़कती है और लोगों के दिमाग में यह बात आती है कि हमारे मंदिर को तोड़ा जा रहा है, हमारी मस्जिद को तोड़ा जा रहा है ।

तो मैं सरकार से यह आग्रह करूंगा कि जो भी इस प्रकार की एक-एक, दो-दो लाख लोगों की संख्या की जो नई बस्तियां बनें, उनके अंदर मंदिर के लिए, मस्जिद के लिए, गिरजा के लिए, गुरुद्वारे के लिए पहले से जमीन छोड़ी जाए, उनको बनाने की परमिशन दी जाए और उनको बनाने के लिए स्वतंत्र रूप से छोड़ा

[डा० अंबरार अहमद खान]

जाए, वरना इस प्रकार की जबरदस्ती से लोग मंदिर, मस्जिद बनाते हैं और सरकारी आफीसर उन्हें रोकते हैं, जिससे सांप्रदायिक दुर्भाव पैदा होता है और जो असांप्रदायिक तत्व हैं, वे लोगों की सांप्रदायिक भावना को भड़का कर देश में अराजकता पैदा करने में कामयाब हो जाते हैं । धन्यवाद, मेडम ।

Reported Import of Arms by Nepal from China in Violation of 1950 Indo-Nepal Treaty

SHRI KAPIL VERMA (Uttar Pradesh) : Madam, through you, I raise a matter of great importance to the nation's security. The recent imports of huge quantities of Chinese arms by Nepal have caused great concern to India as it is in blatant violation of the spirit of the 1950 Indo-Nepal Treaty of Freindship and Peace which enjoins on the two countries to have closer consultations in the matter of security to share security perceptions. Nepal has failed to inform officially her willingness to secure Chinese arms unlike she did a couple of years ago when Nepal bought American and British defence equipment. Thus Nepal has turned to the Chinese for the defence supplies to it so far catered to exclusively by India, mostly on an ex-gratia basis. Madam, according to authoritative reports from Kathmandu the arms were brought in a convoy of 300 Chinese trucks from the border town of Kodari. The House may recall that when the Kodari-Kathmandu highway was constructed about two years ago, India had expressed its unhappiness in view of its impact on its own defence. The arms imported include AK-47 assault rifles, missiles and anti aircraft guns. A large quantity of shoes and uniforms have also been brought in these trucks. Madam, the availability of Chinese arms in Nepal with which Bihar, U.P., and West Bengal share a common and unimpeded border should make it clear to us that there are new threats from the Chinese side across the Nepalese borders. Strangely enough, Nepal has deployed these arms on our long borders. The liberal availability of Chinese arms in the hands of Nepalese security personnel opens the prospects of these being clandestinely spilling over to the hotter spots in India. We know that the Punjab terrorists can get supplies of arms and also refuge from the migrants in lakhimpuri and Gonda districts of U.P. which are contiguous to the West Nepal Turai border which is open. The Chinese AK-47 rifles and shoulder-fired missiles are already in the hands of terrorists. Madam, we are also naturally anxious about the possibility of these arms finding their way into the hands of naxalites in Northern Bihar and certain type of extremists in Darjeeling The situation is agravated by the fact that there are certain anti-Indian and pro-Chinese elements who are very active in the Nepalese border area along our borders. Madam, following this sort of reports, Mr. Natwar Singh, our Minister of State for External Affairs, visited Kathmandu where he met the King. I would like to know